

CLASS 8

SOCIAL SCIENCE

NCERT SOLUTIONS

NCERT Class 8 Social Science Solutions in Hindi (Samaj ka Adhyayan)

कक्षा 8 (हर्दल मीडलम) की सामाजल वलज्जान पाठ्यपुस्तक समाज का अध्दयन: भारत और उसके आगे (भाग 1) (NCERT, NEP 2026-27 पाठ्यक्रम) के सभी 7 अध्दय...

Contents

पाठों की सूची और मुख्य अवधारणा

अध्दयाय 1: प्राकृतल संसाधन एवं उनका उपयोग

अध्दयाय का सार और महत्त्व

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

अध्दयाय 2: भारत के राजनैतल मानचलर का पुनर्रमाण

अध्दयाय का सार और महत्त्व

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

अध्दयाय 3: मराठा साम्राज्य का उदय

अध्दयाय का सार और महत्त्व

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

अध्दयाय 4: भारत में औपनवलशल काल

अध्दयाय का सार और महत्त्व

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

अध्दयाय 5: सार्वभौमल मताधलार और भारत की नरलवाचन प्रणाली

अध्दयाय का सार और महत्त्व

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

अध्दयाय 6: संसदीय प्रणाली—वधायल और कार्यपालल

अध्दयाय का सार और महत्त्व

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

अध्दयाय 7: उत्पादन के कारक

अध्दयाय का सार और महत्त्व

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

कक्षा 8 (हिंदी मीडियम) की सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक समाज का अध्ययन: भारत और उसके आगे (भाग 1) (NCERT, NEP 2026-27 पाठ्यक्रम) के सभी 7 अध्यायों के लिए हल किए गए प्रश्नोत्तर नीचे दिए गए हैं। These Class 8 Social Science solutions are also useful as quick revision notes before exams.

यह समूह भाग 1 (7 अध्याय) को कवर करता है। NCERT ने इस किताब का भाग 2 अभी तक हिंदी मीडियम में जारी नहीं किया है; जारी होते ही इसे यहां जोड़ा जाएगा।

पाठों की सूची और मुख्य अवधारणा अध्याय 1: प्राकृतिक संसाधन एवं उनका उपयोग अध्याय 2: भारत के राजनैतिक मानचित्र का पुनर्निर्माण अध्याय 3: मराठा साम्राज्य का उदय अध्याय 4: भारत में औपनिवेशिक काल अध्याय 5: सार्वभौमिक मताधिकार और भारत की निर्वाचन प्रणाली अध्याय 6: संसदीय प्रणाली—विधायिका और कार्यपालिका अध्याय 7: उत्पादन के कारक

अध्याय 1: प्राकृतिक संसाधन एवं उनका उपयोग

यह अध्याय NCERT की कक्षा 8 सामाजिक विज्ञान (भाग 1) की वास्तविक पाठ्यपुस्तक 'समाज का अध्ययन: भारत और उसके आगे' के अध्याय 1 पर आधारित है, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों के अर्थ, उनके वर्गीकरण तथा उनके विवेकपूर्ण उपयोग की चर्चा की गई है। नीचे पाठ्यपुस्तक के 'प्रश्न और क्रियाकलाप' खंड के वास्तविक प्रश्नों के हल दिए गए हैं।

प्राकृतिक संसाधन और उनका वर्गीकरण (संक्षेप में)

प्रकृति से प्राप्त वे वस्तुएँ जिन्हें मानव अपने जीवन-यापन या उपभोग के लिए उपयोग में लाता है, प्राकृतिक संसाधन कहलाती हैं। इन्हें तीन प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है — जीवन के लिए आवश्यक संसाधन (वायु, जल, भोजन सामग्री के लिए संसाधन (लकड़ी, खनिज, धातुएँ) और ऊर्जा के लिए संसाधन (कोयला, सूर्य का प्रकाश, पवन)। इसके अतिरिक्त इन्हें नवीकरणीय (जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, प्रवाहित जल, वन) तथा अनवीकरणीय (जैसे कोयला, पेट्रोलियम, लोहा, ताँबा, सोना) संसाधनों में भी बाँटा जाता है।

प्रश्न और क्रियाकलाप

प्रश्न 1: आज जो संसाधन नवीकरणीय है, उसे कल अनवीकरणीय कैसे बनाया जा सकता है? कुछ ऐसे उपायों का वर्णन कीजिए जिनसे ऐसा होने से रोका जा सकता है।
हल: कोई भी नवीकरणीय संसाधन तभी नवीकरणीय बना रहता है जब प्रकृति के पुनर्स्थापन और पुनर्जनन की दर के बराबर या उससे धीमी गति से उसका उपयोग किया जाए। यदि हम इस दर से अधिक तेज़ी से उसका दोहन करने लगें — जैसे वृक्षों के बढ़ने की गति से अधिक तेज़ी से वनों की कटाई करना, या मछलियों के प्रजनन काल में ही अत्यधिक मछली-पालन करना — तो वह संसाधन समय के साथ समाप्त हो सकता है और व्यावहारिक रूप से अनवीकरणीय जैसा बन जाता है। इसे रोकने के उपाय: (1) संसाधन के उपयोग की दर को उसकी प्राकृतिक पुनर्भरण दर के अनुरूप रखना, (2) वनों की कटाई के साथ-साथ नियमित वृक्षारोपण करना, (3) परंपरागत संरक्षण-प्रथाओं (जैसे पवित्र उपवन) को प्रोत्साहित करना, (4) नवीकरणीय संसाधनों के प्रबंधन में तकनीक व कौशल में निवेश करना।

प्रश्न 2: पाँच पारिस्थितिकी तंत्र कार्यों के नाम बताइए जो मानव के लिए उपयुक्त हैं।
हल: (1) वृक्षों द्वारा ऑक्सीजन का उत्पादन, (2) वनों द्वारा जल का प्राकृतिक शुद्धिकरण, (3) वनस्पति द्वारा मृदा-अपरदन को रोकना, (4) वन्य पशु-पक्षियों को आवास एवं भोजन प्रदान करना, (5) कीट-पतंगों (जैसे मधुमक्खियों) द्वारा फसलों का परागण।

प्रश्न 3: नवीकरणीय संसाधन क्या हैं? ये अनवीकरणीय संसाधनों से कैसे भिन्न हैं? लोग यह सुनिश्चित करने के लिए क्या कर सकते हैं कि नवीकरणीय संसाधन हमारे और आने वाली पीढ़ियों के उपयोग के लिए उपलब्ध रहें? दो उदाहरण दीजिए।
हल: नवीकरणीय संसाधन वे संसाधन हैं जो प्रकृति के पुनर्स्थापन और पुनर्जनन की प्राकृतिक प्रक्रिया से समय के साथ स्वयं की पूर्ति कर लेते हैं — जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा। इसके विपरीत, अनवीकरणीय संसाधन (जैसे कोयला, पेट्रोलियम) बनने में इतना लंबा समय लगता है कि जिस दर से हम उनका उपयोग करते हैं, उस दर से उनकी पुनःपूर्ति संभव नहीं है। नवीकरणीय संसाधनों को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने हेतु उनका उपयोग सातत्यपूर्ण दर पर करना ज़रूरी है, जिससे पुनर्स्थापन-पुनर्जनन का प्राकृतिक चक्र बाधित न हो। दो उदाहरण: सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा।

प्रश्न 4: अपने घर और पड़ोस में ऐसी सांस्कृतिक प्रथाओं की पहचान किजिए जो प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग की ओर इंगित करती हैं। हल: यह एक व्यक्तिगत अवलोकन-आधारित क्रियाकलाप है, अतः विद्यार्थी अपने आस-पास देखकर उत्तर लिखें। कुछ सामान्य उदाहरण: तुलसी जैसे पौधों की पूजा और उनका संरक्षण, गाँवों में पवित्र उपवनों की परंपरा जहाँ वृक्षों की कटाई वर्जित होती है, जल-स्रोतों को पवित्र मानकर उनकी स्वच्छता बनाए रखने की प्रथा, वर्षा जल संचयन की पारंपरिक विधियाँ, तथा वृक्षों (जैसे बरगद, पीपल) को न काटने की सामाजिक मान्यताएँ।

प्रश्न 5: वर्तमान उपयोग के लिए वस्तुओं के उत्पादन में किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए? हल: पाठ्यपुस्तक के अनुसार उत्पादन में यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि पारंपरिक सामग्री व विधियों को आधुनिक तकनीकी प्रगति के साथ इस प्रकार संयोजित किया जाए कि: (1) उत्पादन की प्रक्रिया कम-से-कम प्रदूषण फैलाए, (2) उससे स्थानीय स्तर पर रोज़गार उत्पन्न हो, (3) उस स्थान की जलवायु को ध्यान में रखकर उत्पाद की रूपरेखा तैयार कि जाए, और (4) संसाधनों का दोहन उनकी प्राकृतिक पुनर्भरण दर से अधिक न हो।

अध्याय का सार और महत्त्व

यह अध्याय हमें सिखाता है कि प्राकृतिक संसाधन असीमित नहीं हैं और इनके नवीकरणीय बने रहने के लिए मानव द्वारा विवेकपूर्ण, संतुलित उपयोग आवश्यक है। भारत में कोयले जैसे अनवीकरणीय संसाधनों के भंडार सीमित हैं (अनुमानतः अगले लगभग 50 वर्षों के उपयोग योग्य), इसलिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर बढ़ना और परंपरागत संरक्षण-ज्ञान को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ना समय की आवश्यकता है।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

प्रश्न: प्राकृतिक संसाधन किसे कहते हैं? उत्तर: प्रकृति से प्राप्त वे पदार्थ और सामग्रियाँ जिन्हें मानव अपने उपयोग के लिए मूल्यवान मानता है, प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं।

प्रश्न: नवीकरणीय और अनवीकरणीय संसाधनों में क्या अंतर है? उत्तर: नवीकरणीय संसाधन (जैसे सौर व पवन ऊर्जा) प्रकृति के पुनर्स्थापन-पुनर्जनन चक्र से स्वतः पूर्ति कर लेते हैं, जबकि अनवीकरणीय संसाधन (जैसे कोयला, पेट्रोलियम) बनने में लाखों वर्ष लगते हैं और उपयोग की दर से उनकी पुनःपूर्ति संभव नहीं।

प्रश्न: भारत में कोयले का भंडार कितने समय तक चल सकता है? उत्तर: पाठ्यपुस्तक के अनुसार अनुमानतः भारत में कोयले का भंडार वर्तमान उपयोग दर पर अगले लगभग 50 वर्षों तक चल सकता है, इसलिए विवेकपूर्ण उपयोग आवश्यक है।

प्रश्न: पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएँ (ecosystem services) क्या हैं? उत्तर: जब प्रकृति की स्वाभाविक प्रक्रियाएँ (जैसे वृक्षों द्वारा ऑक्सीजन उत्पादन, वनों द्वारा जल-शुद्धिकरण) मनुष्यों के लिए लाभदायक होती हैं, तब उन्हें पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएँ कहा जाता है।

अध्याय 2: भारत के राजनैतिक मानचित्र का पुनर्निर्माण

यह अध्याय NCERT कक्षा 8 सामाजिक विज्ञान (भाग 1) के अध्याय 2 पर आधारित है, जिसमें मध्यकालीन भारत में विदेशी आक्रमणों, दिल्ली सल्तनत, मुगल साम्राज्य, विजयनगर तथा अहोम जैसे क्षेत्रीय साम्राज्यों और सिख पंथ के उदय के माध्यम से भारत की राजनैतिक सीमाओं के बार-बार बदलने की कहानी बताई गई है। नीचे पाठ्यपुस्तक के वास्तविक 'प्रश्न और क्रियाकलाप' खंड के हल दिए गए हैं।

कालखंड का संक्षिप्त परिचय

इस कालखंड में तुर्क, अफ़ग़ान और मुग़ल सेनाओं के नेतृत्व में अनेक विदेशी आक्रमण हुए, जिनसे पुराने राजवंशों का पतन हुआ और नए राज्यों-साम्राज्यों का उदय हुआ। राजनैतिक अस्थिरता के बावजूद भारत आर्थिक रूप से समृद्ध बना रहा — कृषि और व्यापार का विस्तार हुआ, तथा वास्तुकला, संगीत और चित्रकला जैसी सांस्कृतिक गतिविधियों का उत्कर्ष हुआ। मुग़ल सम्राट अकबर का शासनकाल क्रूरता (जैसे चित्तौड़गढ़ की घेराबंदी में हुआ नरसंहार) से आरंभ होकर बाद में सहिष्णुता की नीति ('सुलह-ए-कुल') में बदल गया। इसी दौर में विजयनगर और अहोम जैसे साम्राज्यों ने अपनी विशिष्ट सैन्य व प्रशासनिक व्यवस्थाओं के बल पर लंबे समय तक स्वतंत्रता बनाए रखी, और गुरु नानक द्वारा स्थापित सिख पंथ ने समानता व सेवा के मूल्यों का प्रसार किया।

प्रश्न और क्रियाकलाप

प्रश्न 1: दिल्ली सल्तनत और मुग़ल साम्राज्य की राजनैतिक रणनीतियों की तुलना कीजिए। इनमें क्या समानताएँ और भिन्नताएँ थीं? हल: समानताएँ: दोनों ही तुर्क-अफ़ग़ान/मध्य-एशियाई मूल की शक्तियाँ थीं जिन्होंने उत्तर भारत के बड़े भू-भाग पर शासन किया, दोनों ने भूमि-राजस्व पर आधारित प्रशासनिक ढाँचा (सल्तनत में इक़ता व्यवस्था, मुग़लों में मनसबदारी-जागीरदारी व्यवस्था) अपनाया, और दोनों को क्षेत्रीय शक्तियों (जैसे राजपूत, विजयनगर, अहोम आदि) के सतत प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। भिन्नताएँ: दिल्ली सल्तनत में सत्ता बार-बार एक वंश से दूसरे वंश (गुलाम, खिलजी, तुग़लक, सैयद, लोदी) में स्थानांतरित होती रही, जिससे राजनैतिक निरंतरता कमज़ोर रही; जबकि मुग़ल साम्राज्य कहीं अधिक केंद्रीकृत और स्थिर रहा तथा एक ही वंश के अधीन लंबे समय तक शासन चला। अकबर जैसे मुग़ल शासकों ने सुलह-ए-कुल और वैवाहिक-राजनैतिक गठबंधनों के माध्यम से गैर-मुस्लिम शक्तियों (विशेषतः राजपूतों) को साम्राज्य में समाहित करने की नीति अपनाई, जो सल्तनत काल में सामान्यतः उतनी व्यवस्थित नहीं थी।

प्रश्न 2: विजयनगर साम्राज्य और अहोम साम्राज्य जैसे अन्य राज्य अपेक्षाकृत अधिक समय तक पराजित होने से कैसे बच सके? उनकी सफलता में कि-भौगोलिक, सैन्य और सामाजिक कारकों का योगदान था?हल: अहोम साम्राज्य (13वें शताब्दी में वर्तमान म्यांमार से ब्रह्मपुत्र घाटी में आकर स्थापित) की सफलता के पीछे उनकी अनूठी 'पाइक' प्रणाली थी, जिसमें भूमि अधिकारों के बदले श्रम या सैन्य सेवा ली जाती थी — इससे बिना स्थायी सेना रखे भी शीघ्रता से बड़ी सेना जुटाई जा सकती थी। इसके साथ ही घने जंगलों, पहाड़ियों और नदियों के भौगोलिक ज्ञान पर आधारित गुरिल्ला रणनीति (जैसे 1671 के सराइघाट युद्ध में सेनापति लचित बरफुकन के नेतृत्व में मात्र 10,000 सैनिकों द्वारा 30,000 की मुगल सेना को हराना) उनकी सफलता का बड़ा कारण रही। विजयनगर साम्राज्य (स्थापना 1336) की सफलता में सुदृढ़ किलेबंदी, कृषि हेतु विस्तृत सिंचाई-व्यवस्था तथा व्यापार से प्राप्त समृद्धि का योगदान था, जिसने इसे लंबे समय तक एक शक्तिशाली दक्षिण भारतीय साम्राज्य बनाए रखा (यद्यपि अंततः 1565 के तालीकोटा/राक्षसी-तंगड़ी युद्ध में यह दक्कन की सल्तनतों के संयुक्त गठबंधन से पराजित हुआ)।

प्रश्न 3: कल्पना कीजिए कि आप अकबर या कृष्णदेवराय के दरबार में एक विद्वान हैं। अपने किसी मित्र को पत्र लिखकर वहाँ की राजनीति, व्यापार, संस्कृति और समाज का वर्णन कीजिए।हल: यह एक कल्पना-आधारित रचनात्मक क्रियाकलाप है; अतः विद्यार्थी अपनी कल्पनाशीलता से पत्र लिखें। एक नमूना दृष्टिकोण: अकबर के दरबार के विद्वान की दृष्टि से लिखते समय पत्र में सुलह-ए-कुल नीति के अंतर्गत विभिन्न पंथों के विद्वानों की उपस्थिति, इबादतखाने में होने वाले धार्मिक वाद-विवाद, टोडरमल की भूमि-राजस्व व्यवस्था के कारण बढ़ती समृद्धि, तथा राजपूत-मुगल वैवाहिक संबंधों से बने सामाजिक सामंजस्य का उल्लेख किया जा सकता है।

प्रश्न 4: अकबर, जो अपनी युवावस्था में एक क्रूर विजेता था, कुछ वर्षों बाद कैसे सहिष्णु और दयालु हो गया? ऐसे परिवर्तन का क्या कारण हो सकता है? हल: पाठ्यपुस्तक के अनुसार युवा अकबर ने चित्तौड़गढ़ की घेराबंदी (जहाँ हज़ारों नागरिकों का नरसंहार हुआ और सैकड़ों राजपूत महिलाओं ने जौहर किया) जैसे आरंभिक अभियानों में अत्यंत क्रूरता दिखाई थी। किंतु समय के साथ, जैसे-जैसे उसके साम्राज्य का विस्तार होता गया, उसने इसे स्थिर बनाए रखने के लिए बल के स्थान पर राजनैतिक युक्तियाँ अपनाई — पड़ोसी राज्यों की राजकुमारियों से वैवाहिक संबंध स्थापित किए, राजपूत व अन्य क्षेत्रीय शक्तियों को दरबार में सम्मान दिया, अलोकप्रिय 'जज़िया' कर समाप्त किया और 'सुलह-ए-कुल' (सभी पंथों के प्रति सहिष्णुता) की नीति अपनाई। इस परिवर्तन का एक बड़ा व्यावहारिक कारण यह भी था कि विशाल व विविधतापूर्ण साम्राज्य को स्थायी रूप से केवल बलपूर्वक नियंत्रित रखना कठिन था — सहयोग और समावेशन की नीति साम्राज्य को अधिक स्थिर व दीर्घजीवी बनाने में सहायक सिद्ध हुई।

प्रश्न 5: यदि विजयनगर साम्राज्य तालीकोटा का युद्ध जीत जाता तो क्या होता? कल्पना कीजिए और दक्षिण भारत के राजनीतिक और सांस्कृतिक इतिहास पर उसके प्रभाव का वर्णन कीजिए। हल: यह एक काल्पनिक ('अगर-तो') विश्लेषणात्मक क्रियाकलाप है, इसलिए इसका कोई एक निश्चित 'सही' उत्तर नहीं है — विद्यार्थियों को तर्कसंगत अटकल (informed speculation) प्रस्तुत करनी चाहिए। एक संभावित दृष्टिकोण: यदि विजयनगर विजयी होता, तो संभवतः दक्षिण भारत में एक शक्तिशाली हिंदू साम्राज्य कहीं अधिक लंबे समय तक बना रहता, हम्पी जैसे नगरों का सांस्कृतिक व वास्तुकलात्मक विकास और अधिक होता, तथा दक्कन की सल्तनतों का प्रभाव सीमित रहता। इससे क्षेत्र की व्यापारिक समृद्धि (मसालों व वस्त्रों के व्यापार सहित) और स्थानीय भाषाओं-कलाओं के संरक्षण को और बल मिल सकता था। (विद्यार्थी अपने तर्क के साथ इससे भिन्न किंतु तर्कसंगत उत्तर भी दे सकते हैं।)

प्रश्न 6: प्रारंभिक सिख पंथ द्वारा प्रचारित अनेक मूल्य जैसे समानता, सेवा और न्याय आज भी प्रासंगिक हैं। इनमें से किसी एक मूल्य का चयन कीजिए और चर्चा कीजिए कि यह समकालीन समाज में कैसे प्रासंगिक है। हल: उदाहरण के लिए 'सेवा' का मूल्य लें — गुरु नानक द्वारा स्थापित सिख पंथ में लंगर (सामुदायिक रसोई, जहाँ जाति, धर्म या आर्थिक स्थिति के भेद के बिना सभी को निःशुल्क भोजन कराया जाता है) इस मूल्य का प्रत्यक्ष उदाहरण है। आज के समाज में यह मूल्य आपदा राहत कार्यों, निःशुल्क सामुदायिक रसोइयों और स्वैच्छिक सामाजिक सेवा संगठनों के रूप में उतना ही प्रासंगिक है, क्योंकि यह असमानता को कम करने और सामूहिक सहयोग की भावना को बढ़ावा देने में सहायक है।

प्रश्न 7: कल्पना कीजिए कि आप किसी बंदरगाह नगर (सूरत, कालीकट या हुगली) में एक व्यापारी हैं। वहाँ वस्तुओं, व्यापार करने वाले लोगों, जहाज़ों की आवा-जाही आदि के संबंध में आप जो दृश्य देखते हैं, उनका वर्णन कीजिए। हल: यह भी एक कल्पना-आधारित वर्णनात्मक क्रियाकलाप है। एक नमूना उत्तर: सूरत के व्यापारी की दृष्टि से — बंदरगाह पर मक्का-मदीना जाने वाले हज यात्रियों के जहाज़, यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों (जैसे अंग्रेज़, डच) के जहाज़, वस्त्र (सूती व रेशमी कपड़े), मसाले, नील (indigo) जैसी वस्तुओं का लेन-देन, तथा विभिन्न भाषाएँ बोलते हुए स्थानीय व विदेशी व्यापारियों की चहल-पहल — ऐसे दृश्य देखे जा सकते हैं। कालीकट (मालाबार तट) के लिए काली मिर्च व अन्य मसालों का व्यापार, तथा हुगली (बंगाल) के लिए यूरोपीय ईस्ट इंडिया कंपनियों की उपस्थिति एवं वस्त्र-व्यापार को केंद्र में रखा जा सकता है।

अध्याय का सार और महत्व

यह अध्याय हमें सिखाता है कि मध्यकालीन भारत में बार-बार होने वाले आक्रमणों और राजनैतिक अस्थिरता के बावजूद, भारतीय समाज ने आर्थिक व सांस्कृतिक रूप से स्वयं को ढाला और समृद्ध बनाए रखा। अकबर जैसे शासकों का बल से सहिष्णुता की ओर परिवर्तन, तथा विजयनगर, अहोम और सिख पंथ जैसी शक्तियों का उदय, यह दर्शाता है कि दीर्घकालिक स्थिरता के लिए समावेशन, अनुकूलन और सामाजिक सामंजस्य कितने महत्वपूर्ण हैं।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

प्रश्न: अकबर की 'सुलह-ए-कुल' नीति क्या थी? उत्तर: यह सभी धार्मिक पंथों के प्रति समान सहिष्णुता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति थी, जिसके अंतर्गत अकबर ने जज़िया कर समाप्त किया और विभिन्न पंथों के लोगों को दरबार व प्रशासन में स्थान दिया।

प्रश्न: सराइघाट का युद्ध कब और किनके बीच हुआ था? उत्तर: सराइघाट का युद्ध 1671 में अहोम साम्राज्य (सेनापति लचित बरफुकन के नेतृत्व में) और मुगल साम्राज्य के बीच ब्रह्मपुत्र नदी पर लड़ा गया था, जिसमें अहोमों की विजय हुई।

प्रश्न: तालीकोटा का युद्ध किसके और कब हुआ था? उत्तर: तालीकोटा (राक्षसी-तंगड़ी) का युद्ध 1565 में विजयनगर साम्राज्य और दक्कन की सल्तनतों के संयुक्त गठबंधन के बीच हुआ था, जिसमें विजयनगर की पराजय हुई।

प्रश्न: अहोम साम्राज्य की 'पाइक' प्रणाली क्या थी? उत्तर: यह एक ऐसी व्यवस्था थी जिसमें प्रत्येक सक्षम व्यक्ति को भूमि अधिकारों के बदले राज्य को श्रम या सैन्य सेवा देनी होती थी, जिससे बिना स्थायी सेना के भी आवश्यकता पड़ने पर शीघ्र बड़ी सेना संगठित की जा सकती थी।

अध्याय 3: मराठा साम्राज्य का उदय

यह अध्याय NCERT कक्षा 8 सामाजिक विज्ञान (भाग 1) के अध्याय 3 पर आधारित है, जिसमें छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा 1674 में रायगढ़ दुर्ग पर राज्याभिषेक के साथ स्थापित मराठा साम्राज्य के उदय, उसकी सैन्य रणनीति, दुर्ग-व्यवस्था, नौसेना और सांस्कृतिक विरासत की चर्चा की गई है। नीचे पाठ्यपुस्तक के वास्तविक 'प्रश्न और क्रियाकलाप' खंड के हल दिए गए हैं।

कालखंड का संक्षिप्त परिचय

छत्रपति शिवाजी महाराज ने 17वीं शताब्दी में मराठा साम्राज्य की स्थापना की; मुगल सत्ता के विरुद्ध उनके दशकों के प्रतिरोध ने 18वीं शताब्दी में मराठों के अखिल भारतीय विस्तार में सहायता की। मराठा शासन ने पूर्वी, उत्तरी और मध्य भारत के अधिकांश भागों पर नियंत्रण कर अंग्रेजों से पहले सबसे बड़ा भारतीय साम्राज्य स्थापित किया, जिसे स्वराज्य के आदर्श ने प्रेरित किया। पाठ्यपुस्तक के अनुसार अंग्रेजों ने भारत को मुगलों या किसी अन्य भारतीय शक्ति की तुलना में मराठों से अधिक प्राप्त किया। दुर्ग मराठा राज्य की आधारशिला थे — मराठों ने सैकड़ों दुर्गों पर नियंत्रण कर रणनीतिक श्रेष्ठता बनाए रखी, और उनकी दुर्जेय नौसेना ने बिना नवीनतम तकनीक के भी लंबे समय तक यूरोपीय नौसैनिक वर्चस्व का प्रतिकार किया।

प्रश्न और क्रियाकलाप

प्रश्न 1: विश्लेषण करें कि किस प्रकार भूगोल (विशेषकर पर्वत और समुद्र तट) ने मराठा सैन्य रणनीति और राज्य-निर्माण को निर्धारित किया। हल: सह्याद्रि (पश्चिमी घाट) की पहाड़ी और दुर्गम भौगोलिक बनावट ने मराठों को गुरिल्ला युद्ध-पद्धति ('गनिमी कावा') अपनाने में सक्षम बनाया, जिसमें छोटी टुकड़ियाँ तीव्र आक्रमण कर पहाड़ी दुर्गों में शरण ले लेती थीं — यह विशाल किंतु धीमी मुगल सेनाओं के विरुद्ध अत्यंत प्रभावी रणनीति थी। पहाड़ी क्षेत्र में स्थित रायगढ़, सिंधुदुर्ग, प्रतापगढ़ जैसे दुर्गों ने प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान की, जिससे कम संसाधनों में भी मज़बूत रक्षा-व्यवस्था संभव हो सकी। साथ ही, कोंकण के लंबे समुद्र तट ने मराठों को एक सुदृढ़ नौसेना (कान्होजी आंग्रे के नेतृत्व में) विकसित करने का अवसर दिया, जिसने तटीय व्यापार-मार्गों की रक्षा की और यूरोपीय व्यापारिक-नौसैनिक शक्तियों को चुनौती दी। इस प्रकार पर्वतीय भूभाग ने भूमि-रणनीति को और समुद्र तट ने नौसैनिक शक्ति को आकार दिया, दोनों मिलकर मराठा राज्य-निर्माण की रीढ़ बने।

प्रश्न 2: कल्पना कीजिए कि आप विद्यार्थियों के लिए किसी मराठा नेता की संक्षिप्त जीवनी लिख रहे हैं। किसी एक व्यक्तित्व (कान्होजी आंग्रे, बाजीराव प्रथम, महादजी शिंदे, अहिल्याबाई होलकर या ताराबाई) का चयन कीजिए और उनकी प्रेरणादायक विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए तीन-चार अनुच्छेद लिखिए। किसी एक चुनौती का वर्णन कीजिए जिस पर उन्होंने विजय प्राप्त की। हल: यह एक रचनात्मक जीवनी-लेखन क्रियाकलाप है; अतः विद्यार्थी अपनी पसंद के व्यक्तित्व पर शोध करके स्वयं लिखें। एक नमूना दृष्टिकोण — अहिल्याबाई होलकर: होलकर वंश की इस शासिका ने अपने पति व पुत्र की असामयिक मृत्यु के बाद भी मालवा क्षेत्र (राजधानी माहेश्वर/इंदौर) पर दशकों तक न्यायपूर्ण व कुशल शासन किया। उन्होंने प्रजा-कल्याण, न्याय-व्यवस्था तथा देशभर में मंदिरों, घाटों व धर्मशालाओं के निर्माण को प्राथमिकता दी। उनकी सबसे बड़ी चुनौती एक पुरुष-प्रधान राजनैतिक व्यवस्था में स्वयं को एक सक्षम व सम्मानित शासिका के रूप में स्थापित करना था, जिस पर उन्होंने प्रशासनिक कुशलता व करुणामय नीतियों से विजय प्राप्त की।

प्रश्न 3: यदि आपको आज किसी एक मराठा दुर्ग (जैसे — रायगढ़, सिंधुदुर्ग, जिंजी या प्रतापगढ़) को देखने का अवसर मिले तो आप किसे चुनेंगे और क्यों? उसके इतिहास, वास्तुकला और सामरिक महत्व का अध्ययन कीजिए। हल: यह एक व्यक्तिगत पसंद व शोध-आधारित क्रियाकलाप है। एक नमूना उत्तर — रायगढ़ दुर्ग एक उपयुक्त चयन हो सकता है क्योंकि यहीं 1674 में छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक हुआ था, जो मराठा साम्राज्य के औपचारिक आरंभ का प्रतीक है। इसकी सामरिक विशेषता यह थी कि यह एक ऊँची, दुर्गम पहाड़ी पर स्थित था जिससे यह लगभग अभेद्य बन जाता था, तथा इसकी वास्तुकला में भव्य प्रवेश-द्वार, दरबार-भवन व जलाशय शामिल थे जो इसे प्रशासनिक राजधानी के योग्य बनाते थे।

प्रश्न 4: अध्याय में लिखा है कि अंग्रेज़ों ने भारत को मुग़लों या किसी भी अन्य शक्ति से अधिक मराठों से छीना। आपके विचार में इसका क्या अर्थ है? अध्याय में दिए गए कौन-से प्रमाण इस विचार का समर्थन करते हैं? हल: इसका अर्थ यह है कि जब तक अंग्रेज़ भारत में अपना प्रभुत्व स्थापित कर रहे थे, तब तक मुग़ल साम्राज्य पहले ही काफ़ी कमज़ोर हो चुका था और भारत के अधिकांश भूभाग पर वास्तविक नियंत्रण मराठा साम्राज्य का था — अतः अंग्रेज़ों को अधिकांश क्षेत्र मराठों को पराजित करके (आंग्ल-मराठा युद्धों के माध्यम से) प्राप्त करने पड़े, न कि सीधे मुग़लों से। इसका समर्थन इस तथ्य से होता है कि मराठों ने पूर्वी, उत्तरी और मध्य भारत के अधिकांश भागों पर नियंत्रण करते हुए अंग्रेज़ों से पूर्व सबसे बड़ा भारतीय साम्राज्य स्थापित किया था, जिसका अर्थ है कि इतने विशाल क्षेत्र पर अंग्रेज़ी सत्ता स्थापित करने के लिए उन्हें प्रत्यक्ष रूप से मराठा शक्ति से ही टकराना पड़ा।

प्रश्न 5: तुलना कीजिए कि छत्रपति शिवाजी और उत्तरवर्ती मराठों ने धार्मिक स्थलों और विभिन्न धर्म के लोगों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया। इस अध्याय में कौन-सा प्रमाण धार्मिक विविधता के प्रति उनके दृष्टिकोण को दर्शाता है? हल: पाठ्यपुस्तक के अनुसार मराठा शासन ने बिना किसी धार्मिक भेदभाव के स्थानीय हिंदू परंपराओं को पुनर्जीवित करने के साथ-साथ समावेशी दृष्टिकोण अपनाया — ‘मराठा विरासत’ खंड में स्पष्ट कहा गया है कि उन्होंने ‘बिना किसी धार्मिक भेदभाव के’ शासन किया। छत्रपति शिवाजी की नीति भी सामान्यतः धार्मिक स्थलों व विभिन्न मतावलंबियों के प्रति सम्मानपूर्ण रही, जो उत्तरवर्ती मराठा शासकों (जैसे अहिल्याबाई होलकर द्वारा देशभर में विभिन्न मंदिरों व धर्मशालाओं के निर्माण) में भी सतत रूप से परिलक्षित होती है — यह दर्शाता है कि मराठा शासन-व्यवस्था में धार्मिक सहिष्णुता एक निरंतर नीति के रूप में बनी रही।

प्रश्न 6: इस अध्याय में वर्णित है कि मराठों के लिए दुर्ग 'राज्य की आधारशिला' थे। वे इतने महत्वपूर्ण क्यों थे? उन्होंने मराठों को शक्तिशाली शत्रुओं के विरुद्ध खड़े रहने में किस प्रकार सहायता की? हल: दुर्ग मराठों के लिए महत्वपूर्ण थे क्योंकि इन्होंने उन्हें रणनीतिक नियंत्रण, सुरक्षित आश्रय तथा प्रशासनिक केंद्र — तीनों एक साथ प्रदान किए। सैकड़ों दुर्गों के नेटवर्क ने मराठों को किसी भी क्षेत्र में शीघ्रता से सैन्य उपस्थिति स्थापित करने, संसाधनों (अनाज, हथियार, धन) को सुरक्षित संग्रहित करने, तथा शत्रु सेनाओं (चाहे वे संख्या में कितनी भी बड़ी हों) के लिए विजय को अत्यंत कठिन बनाने में सक्षम बनाया। पहाड़ी दुर्गों की दुर्गमता के कारण बड़ी मुगल सेनाएँ भी लंबी घेराबंदी के बावजूद इन्हें आसानी से नहीं जीत पाती थीं, जिससे मराठे शक्तिशाली शत्रुओं के विरुद्ध भी अपनी स्वतंत्रता बनाए रख सके।

प्रश्न 7: आपको मराठा सिक्कों का मुख्य अभिकल्पक (डिज़ाइनर) नियुक्त किया गया है। एक ऐसे सिक्के का रूपांकन कीजिए, जो मराठा उपलब्धियों और मूल्यों का प्रतिनिधित्व करे। अपने द्वारा चुने गए प्रतीकों की व्याख्या कीजिए। हल: यह एक रचनात्मक डिज़ाइन-आधारित क्रियाकलाप है; अतः विद्यार्थी अपनी कल्पना से सिक्का डिज़ाइन करें। एक नमूना दृष्टिकोण: सिक्के के एक ओर रायगढ़ दुर्ग की आकृति (मराठा शक्ति व सुरक्षा का प्रतीक) तथा दूसरी ओर एक जलपोत/जहाज़ की आकृति (कान्होजी आंग्रे की नौसैनिक शक्ति का प्रतीक) अंकित की जा सकती है, साथ ही किनारों पर 'स्वराज्य' शब्द उत्कीर्ण किया जा सकता है, जो स्वशासन के आदर्श का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रश्न 8: मराठा काल की इस भूमिका का अध्ययन करने के पश्चात आपके विचार में भारतीय इतिहास में उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान क्या था? अध्याय से उदाहरण लेकर अपने विचार का समर्थन करते हुए एक अनुच्छेद लिखिए।
हल: यह एक विचार-आधारित क्रियाकलाप है, अतः विद्यार्थी अपने तर्क के साथ उत्तर लिखें। एक संभावित दृष्टिकोण: मराठों का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह था कि उन्होंने दमनकारी विदेशी शासन के विरुद्ध स्वराज्य (स्वशासन) के विचार को व्यावहारिक रूप से साकार करके दिखाया — जैसा कि पाठ्यपुस्तक में कहा गया है, उनके साहसिक संघर्ष ने 'भारतीयों को प्रेरित किया कि वे स्वयं शासन कर सकते हैं' और इस प्रकार भविष्य के स्वतंत्रता आंदोलन की नींव रखी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में एक नए सांस्कृतिक आत्मविश्वास का संचार भी किया।

अध्याय का सार और महत्त्व

यह अध्याय हमें सिखाता है कि छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित मराठा साम्राज्य ने भौगोलिक परिस्थितियों (पर्वत व समुद्र तट) का चतुराईपूर्ण उपयोग करते हुए दुर्ग-आधारित रणनीति और सुदृढ़ नौसेना के बल पर मुग़ल सत्ता को चुनौती दी और अंग्रेज़ों से पहले भारत का सबसे बड़ा साम्राज्य स्थापित किया। स्वराज्य का उनका आदर्श केवल एक क्षेत्रीय साम्राज्य तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आगे चलकर भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के लिए भी एक प्रेरणास्रोत बना।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

प्रश्न: मराठा साम्राज्य की औपचारिक स्थापना कब मानी जाती है? उत्तर: 1674 में रायगढ़ दुर्ग में छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के साथ मराठा साम्राज्य का औपचारिक आरंभ माना जाता है।

प्रश्न: मराठों के लिए दुर्ग इतने महत्वपूर्ण क्यों थे? उत्तर: दुर्ग मराठा राज्य की 'आधारशिला' थे — इनसे रणनीतिक नियंत्रण, सुरक्षित आश्रय और प्रशासनिक केंद्रों की प्राप्ति होती थी, जिससे मराठे शक्तिशाली शत्रुओं के विरुद्ध भी स्वतंत्रता बनाए रख सके।

प्रश्न: मराठा नौसेना का नेतृत्व किसने किया? उत्तर: मराठा नौसेना का प्रमुख नेतृत्व कान्होजी आंग्रे ने किया, जिन्होंने कोंकण तट पर यूरोपीय नौसैनिक शक्तियों को लंबे समय तक चुनौती दी।

प्रश्न: मराठा शासन का भारतीय इतिहास पर सबसे बड़ा प्रभाव क्या था? उत्तर: मराठा शासन ने स्वराज्य (स्वशासन) के आदर्श को व्यावहारिक रूप दिया और भारतीयों में यह विश्वास जगाया कि वे स्वयं शासन कर सकते हैं, जिसने आगे चलकर भारत के स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित किया।

अध्याय 4: भारत में औपनिवेशिक काल

यह अध्याय NCERT कक्षा 8 सामाजिक विज्ञान (भाग 1) के अध्याय 4 पर आधारित है, जिसमें उपनिवेशवाद के अर्थ, भारत में यूरोपीय शक्तियों (पुर्तगाली, फ्रांसीसी, ब्रिटिश) के आगमन, ब्रिटिश शासन की शोषणकारी नीतियों (जैसे धन-निष्कासन और फूट डालो-राज करो) तथा 1857 के महान विद्रोह सहित विभिन्न प्रतिरोध आंदोलनों की चर्चा की गई है। नीचे पाठ्यपुस्तक के वास्तविक 'प्रश्न और क्रियाकलाप' खंड के हल दिए गए हैं।

कालखंड का संक्षिप्त परिचय

धीरे-धीरे ब्रिटिश शासन ने अपने प्रशासनिक ढाँचे, विधिक प्रणाली तथा शैक्षिक संस्थानों को थोपकर भारतीय समाज पर पूर्ण औपनिवेशिक नियंत्रण स्थापित किया। पुर्तगालियों ने गोवा में धर्म-परिवर्तन व सांस्कृतिक पुनर्चना पर विशेष बल दिया, जबकि फ्रांसीसियों की समायोजन नीति ने पुदुचेरी में एक छोटे फ्रांसीसी-भारतीय वर्ग का निर्माण किया। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से अनेक विद्रोह आरंभ हुए, जिनमें 1857 के महान विद्रोह ने कुछ समय के लिए ब्रिटिश शासन को संकट में डाल दिया, यद्यपि अधिकांश विद्रोहों को क्रूरता से कुचल दिया गया।

प्रश्न और क्रियाकलाप

प्रश्न 1: उपनिवेशवाद क्या है? इस अध्याय या अपनी जानकारी के आधार पर तीन विभिन्न परिभाषाएँ दीजिए। हल: उपनिवेशवाद एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें एक शक्तिशाली देश किसी अन्य क्षेत्र या देश पर राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक नियंत्रण स्थापित कर लेता है। तीन दृष्टिकोण से परिभाषाएँ: (1) राजनैतिक दृष्टि से — किसी विदेशी शक्ति द्वारा किसी क्षेत्र पर शासन-सत्ता का प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित करना। (2) आर्थिक दृष्टि से — किसी क्षेत्र के संसाधनों, श्रम और बाज़ारों का उपनिवेशक देश के आर्थिक लाभ हेतु दोहन करना (जैसा कि विलियम डिग्बी के 1901 के कथन में वर्णित है कि 'संपदा सदैव शक्तिशाली लोगों के बल और कौशल द्वारा छीनी जाती रही है')। (3) सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि से — शासित समाज पर विजेता की भाषा, शिक्षा-व्यवस्था, कानून और मूल्यों को थोपना, प्रायः स्वयं को 'सभ्य बनाने वाला' बताकर।

प्रश्न 2: उपनिवेशवादी शासक प्रायः यह दावा करते थे कि उनका उद्देश्य शासित लोगों को 'सभ्य' बनाना था। इस अध्याय में प्राप्त प्रमाणों के आधार पर बताइए कि क्या भारत के संदर्भ में यह सत्य था? क्यों या क्यों नहीं? हल: अध्याय के प्रमाणों के आधार पर यह दावा भारत के संदर्भ में सत्य नहीं ठहरता। विलियम डिग्बी के 1901 के कथन के अनुसार, 'यह लूट आज किसी भी पूर्ववर्ती काल से कहीं अधिक उग्र रूप में चल रही है... आधुनिक इंग्लैंड भारतीय संपदा से महान बना है' — यह स्पष्ट करता है कि ब्रिटिश शासन का वास्तविक उद्देश्य आर्थिक शोषण था, न कि 'सभ्य बनाना'। इसके अतिरिक्त रेलवे-टेलीग्राफ जैसी परियोजनाओं का खर्च भारतीयों से ही वसूला जाना, तथा 'फूट डालो और राज करो' जैसी विभाजनकारी नीतियाँ भी यही दर्शाती हैं कि प्राथमिकता शासित प्रजा के कल्याण से अधिक शासकों के आर्थिक व राजनैतिक हित थे।

प्रश्न 3: भारत को उपनिवेश बनाने की ब्रिटिश नीति पूर्ववर्ती यूरोपीय शक्तियों जैसे पुर्तगाली या फ्रांसीसी से किस प्रकार भिन्न थी?हल: पाठ्यपुस्तक के अनुसार पुर्तगालियों ने गोवा में मुख्यतः धर्म-परिवर्तन और सांस्कृतिक पुनर्रचना पर बल दिया, जिससे समाज में दीर्घकालिक विभाजन उत्पन्न हुआ; फ्रांसीसियों ने पुदुचेरी में समायोजन (assimilation) की नीति अपनाई, जिससे एक छोटा फ्रांसीसी-भारतीय वर्ग बना। इसके विपरीत ब्रिटिश शासन कहीं अधिक व्यापक व व्यवस्थित था — उन्होंने धीरे-धीरे अपना प्रशासनिक ढाँचा, विधिक प्रणाली और शैक्षिक संस्थान पूरे उपमहाद्वीप पर थोपकर पूर्ण औपनिवेशिक नियंत्रण स्थापित किया, जो कि सीमित क्षेत्रीय उपस्थिति वाली पुर्तगाली व फ्रांसीसी नीतियों से कहीं अधिक गहन व दीर्घकालिक प्रभाव वाला था।

प्रश्न 4: 'भारतीयों ने अपने ही दमन का खर्च उठाया।' रेलवे एवं टेलीग्राफ जैसी ब्रिटिश आधारभूत संरचना परियोजनाओं के संदर्भ में इस कथन का क्या तात्पर्य है?हल: इसका तात्पर्य यह है कि रेलवे और टेलीग्राफ जैसी परियोजनाएँ, जिन्हें प्रायः 'भारत के विकास' के रूप में प्रस्तुत किया जाता था, वास्तव में भारतीय करों व ऋणों से वित्तपोषित होती थीं, जबकि इनका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश व्यापारिक माल की ढुलाई तथा सैन्य नियंत्रण को सुदृढ़ करना था, न कि प्राथमिकता से भारतीय जनता का कल्याण। इस प्रकार भारतीय जनता को उन्हीं संरचनाओं के निर्माण हेतु कर चुकाने पड़े जिनका उपयोग आगे चलकर उन्हीं पर शासन व नियंत्रण बनाए रखने के लिए किया गया — २ इस कथन का अर्थ है।

प्रश्न 5: 'फूट डालो और राज करो' वाक्यांश का क्या अर्थ है? भारत में ब्रिटिश शासन द्वारा इसे किस प्रकार प्रयोग में लाया गया, उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
हल: इस वाक्यांश का अर्थ है शासित समाज को धर्म, जाति, क्षेत्र या समुदाय के आधार पर आपस में विभाजित रखकर उन्हें एकजुट प्रतिरोध करने से रोकना, जिससे शासक शक्ति का नियंत्रण सुदृढ़ बना रहे। भारत में ब्रिटिश शासन ने इसे विभिन्न रूपों में प्रयोग किया — उदाहरण के लिए, प्रशासन व सेना में भर्ती में क्षेत्रीय/सामुदायिक भेदभाव करना, विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच पृथक राजनैतिक प्रतिनिधित्व (पृथक निर्वाचिका) को बढ़ावा देना, तथा रियासतों व स्थानीय शासकों के बीच आपसी प्रतिद्वंद्विता का लाभ उठाना, जिससे भारतीय समाज में एकता की जगह विभाजन को बल मिला।

प्रश्न 6: भारतीय जीवन के किसी एक क्षेत्र को चुनिए, जैसे — कृषि, शिक्षा, व्यापार या ग्रामीण जीवन। उपनिवेशवादी शासन ने उसे किस प्रकार प्रभावित किया? क्या आज भी उन परिवर्तनों के कुछ चिह्न दृष्टिगोचर होते हैं? अपने विचारों को एक लघु निबंध, कविता या चित्र के रूप में व्यक्त कीजिए।
हल: यह एक रचनात्मक क्रियाकलाप है; अतः विद्यार्थी अपनी पसंद का क्षेत्र चुनकर स्वयं लिखें। एक नमूना दृष्टिकोण — कृषि क्षेत्र: ब्रिटिश भू-राजस्व व्यवस्थाओं (जैसे स्थायी बंदोबस्त) ने किसानों पर भारी कर का बोझ डाला तथा उन्हें खाद्यान्न के स्थान पर निर्यात हेतु नकदी फ़सलें (जैसे नील, कपास) उगाने के लिए बाध्य किया, जिससे कई बार अकाल जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हुईं। आज भी भारत में भूमि-स्वामित्व के कुछ पैटर्न और कृषि-संकट की जड़ें आंशिक रूप से इसी औपनिवेशिक विरासत से जुड़ी मानी जाती हैं।

प्रश्न 7: कल्पना कीजिए कि आप 1857 में एक संवाददाता हैं। रानी लक्ष्मीबाई द्वारा झाँसी में किए गए प्रतिरोध पर एक संक्षिप्त समाचार विवरण लिखिए। यह भी दर्शाइए कि यह विद्रोह किस प्रकार आरंभ हुआ, फैला और समाप्त हुआ — मुख्य घटनाओं एवं नेताओं को रेखांकित करते हुए एक समय-रेखा या चित्रपट बनाइए।
हल: यह एक रचनात्मक पत्रकारिता-आधारित क्रियाकलाप है। एक नमूना
ढाँचा: आरंभ: 1857 का विद्रोह मेरठ में सैनिकों के मध्य नई एनफ़ील्ड राइफल के कारतूसों को लेकर असंतोष से भड़का। विस्तार: यह असंतोष शीघ्र ही दिल्ली, कानपुर, लखनऊ और झाँसी सहित उत्तर व मध्य भारत के कई भागों में फैल गया। झाँसी में रानी लक्ष्मीबाई ने अपने दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी मानने से ब्रिटिश शासन के इनकार (राज्य-हड़प नीति) के विरुद्ध सशस्त्र प्रतिरोध का नेतृत्व किया और अंतिम समय तक वीरतापूर्वक संघर्ष किया। समाप्ति: 1858 तक ब्रिटिश सेनाओं ने अधिकांश विद्रोही केंद्रों पर पुनः नियंत्रण स्थापित कर लिया।

प्रश्न 8: कल्पना कीजिए यदि भारत कभी भी यूरोपीय शक्तियों का उपनिवेश नहीं बना होता, तब यह किस प्रकार अपने पथ पर विकसित हुआ होता? इस विषय पर लगभग 300 शब्दों की एक लघु कथा लिखिए।
हल: यह एक पूर्णतः काल्पनिक रचनात्मक-लेखन क्रियाकलाप है, इसलिए इसका कोई एक निश्चित 'सही' उत्तर नहीं है — विद्यार्थियों को अपनी तर्कसंगत कल्पनाशीलता से लगभग 300 शब्दों की मौलिक कथा लिखनी चाहिए, जिसमें वे विचार कर सकते हैं कि तत्कालीन भारतीय राज्य-व्यवस्थाएँ (जैसे मराठा, मैसूर, सिख साम्राज्य आदि) स्वतंत्र रूप से किस प्रकार विकसित हो सकती थीं।

प्रश्न 9: भूमिका-अभिनय (रोल-प्ले) — एक ऐतिहासिक संवाद का मंचन कीजिए जिसमें एक ब्रिटिश अधिकारी एवं एक भारतीय व्यक्तित्व जैसे दादाभाई नौरोजी के मध्य ब्रिटिश उपनिवेशवाद पर चर्चा हो रही हो। हल: यह एक रचनात्मक भूमिका-अभिनय क्रियाकलाप है; अतः विद्यार्थी स्वयं संवाद लिखें। एक नमूना दिशा-निर्देश: दादाभाई नौरोजी अपने प्रसिद्ध ‘धन-निष्कासन सिद्धांत’ (Drain of Wealth Theory) के आधार पर तर्क दे सकते हैं कि भारत का धन प्रशासनिक व्यय, अनुचित व्यापार-शर्तों तथा प्रत्यावर्तित लाभ (repatriated profits) के माध्यम से इंग्लैंड जा रहा है, जबकि ब्रिटिश अधिकारी इसके प्रत्युत्तर में रेलवे-शिक्षा जैसे ‘आधुनिकीकरण’ के दावे प्रस्तुत कर सकता है — यह संवाद दोनों दृष्टिकोणों के बीच के वास्तविक ऐतिहासिक वाद-विवाद को दर्शाता है।

प्रश्न 10: औपनिवेशिक काल में अपने राज्य या क्षेत्र के किसी स्थानीय प्रतिरोध आंदोलन (जनजातीय, कृषक या रियासती) का अन्वेषण कीजिए। एक विवरण या पोस्टर तैयार कीजिए, जिसमें कारण, नेतृत्व, माँगें, ब्रिटिश प्रतिक्रिया तथा आज की स्मृति सम्मिलित हो। हल: यह एक क्षेत्र-विशिष्ट शोध-आधारित क्रियाकलाप है; अतः विद्यार्थी अपने राज्य/क्षेत्र के अनुसार स्वयं शोध करें। एक सर्वज्ञात उदाहरण जिसे संदर्भ के रूप में लिया जा सकता है: 1855-56 का संधाल विद्रोह (सिद्धू-कान्हू के नेतृत्व में, अत्यधिक भू-राजस्व व साहूकारी शोषण के विरुद्ध) या बिरसा मुंडा के नेतृत्व में मुंडा विद्रोह — दोनों आंदोलन आज भी संबंधित क्षेत्रों में स्थानीय स्मारकों, लोकगीतों व वार्षिक स्मृति-आयोजनों के माध्यम से याद किए जाते हैं।

अध्याय का सार और महत्त्व

यह अध्याय हमें सिखाता है कि उपनिवेशवाद केवल राजनैतिक अधीनता नहीं था, बल्कि एक व्यवस्थित आर्थिक शोषण-तंत्र भी था, जिसमें भारतीय संसाधनों व श्रम का उपयोग विदेशी शक्ति के लाभ हेतु किया गया, प्रायः ‘सभ्य बनाने’ के आवरण में। भारतीयों ने इसके विरुद्ध 1857 के महान विद्रोह से लेकर अनेक स्थानीय जनजातीय व कृषक आंदोलनों तक निरंतर प्रतिरोध किया, जो आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम की नींव बना।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

प्रश्न: उपनिवेशवाद क्या है? उत्तर: उपनिवेशवाद एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें एक शक्तिशाली देश किसी अन्य क्षेत्र पर राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक नियंत्रण स्थापित कर उसके संसाधनों व श्रम का अपने लाभ हेतु दोहन करता है।

प्रश्न: 1857 का महान विद्रोह कहाँ से आरंभ हुआ था? उत्तर: 1857 का विद्रोह मेरठ में सैनिकों के मध्य नई राइफल के कारतूसों को लेकर उत्पन्न असंतोष से आरंभ हुआ और शीघ्र ही उत्तर व मध्य भारत के कई भागों में फैल गया।

प्रश्न: 'फूट डालो और राज करो' नीति का क्या अर्थ है? उत्तर: यह एक ऐसी रणनीति है जिसमें शासित समाज को धर्म, जाति या क्षेत्र के आधार पर विभाजित रखकर उन्हें एकजुट प्रतिरोध करने से रोका जाता है, जिससे शासक शक्ति का नियंत्रण सुदृढ़ बना रहे।

प्रश्न: दादाभाई नौरोजी का 'धन-निष्कासन सिद्धांत' क्या था? उत्तर: यह सिद्धांत बताता है कि ब्रिटिश शासन के अंतर्गत भारत का धन प्रशासनिक व्यय, अनुचित व्यापार-शर्तों तथा प्रत्यावर्तित लाभ के माध्यम से लगातार इंग्लैंड की ओर प्रवाहित हो रहा था, जिससे भारत की आर्थिक दरिद्रता बढ़ती गई।

अध्याय 5: सार्वभौमिक मताधिकार और भारत की निर्वाचन प्रणाली

यह अध्याय NCERT कक्षा 8 सामाजिक विज्ञान (भाग 1) के अध्याय 5 पर आधारित है, जिसमें सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार, भारत की निर्वाचन प्रणाली, लोकसभा-राज्यसभा के चुनाव में अंतर तथा राष्ट्रपति-उपराष्ट्रपति के निर्वाचन तथा भारतीय लोकतंत्र के समक्ष विद्यमान चुनौतियों की चर्चा की गई है। नीचे पाठ्यपुस्तक के वास्तविक 'प्रश्न और क्रियाकलाप' खंड के हल दिए गए हैं।

कालखंड का संक्षिप्त परिचय

भारत के संविधान निर्माताओं ने आरंभ से ही यह निश्चय कर लिया था कि सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार भारतीय लोकतंत्र की एक आधारभूत विशेषता होगी — अर्थात् जाति, धर्म, लिंग, शिक्षा या आय का भेदभाव किए बिना प्रत्येक वयस्क नागरिक को एक समान मत का अधिकार (भारतीय संविधान के अनुच्छेद 326 के अनुसार)। भारत में मतदान की आयु 1988 में 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष कर दी गई थी। यह उल्लेखनीय है कि स्वतंत्रता से पहले लगभग 13 प्रतिशत भारतीयों को ही मत देने का अधिकार था, जबकि स्वतंत्र भारत ने आरंभ से ही महिलाओं सहित सभी वयस्क नागरिकों को मताधिकार प्रदान किया — जबकि विश्व के कई देशों (जैसे स्विट्जरलैंड, जहां महिलाओं को मताधिकार 1971 में मिला) में महिलाओं को यह अधिकार पाने के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ा। 2024 के आम चुनाव में लगभग 96.8 करोड़ मतदाता लोकसभा के 543 निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान के पात्र थे, और भारत में 2,50,000 से अधिक स्थानीय निकायों में 31 लाख से अधिक निर्वाचित प्रतिनिधि हैं, जिनमें 13 लाख से अधिक महिलाएं शामिल हैं।

प्रश्न और क्रियाकलाप

प्रश्न 1: एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार क्यों महत्वपूर्ण है? हल: सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार का अर्थ है कि जाति, धर्म, नस्ल, लिंग, शिक्षा या आय के भेदभाव के बिना 18 वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक नागरिक को मत देने का समान अधिकार प्राप्त हो। यह एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सुनिश्चित करता है कि सरकार की वैधता समाज के प्रत्येक वर्ग की सहमति पर आधारित हो, न कि केवल किसी विशेषाधिकार-प्राप्त वर्ग की। इससे समाज के कमजोर व वंचित वर्गों को भी अपनी आवाज़ उठाने और नीति-निर्माण को प्रभावित करने का अवसर मिलता है, जिससे शासन अधिक समावेशी, जवाबदेह और प्रतिनिधिपूर्ण बनता है।

प्रश्न 2: 'गुप्त मतदान' का क्या अर्थ है? यह लोकतंत्र में क्यों महत्वपूर्ण है? हल: 'गुप्त मतदान' का अर्थ है कि प्रत्येक मतदाता अपना मत पूर्णतः निजी व गोपनीय ढंग से डालता है, जिससे यह किसी अन्य व्यक्ति को ज्ञात नहीं हो पाता कि उसने किसे मत दिया। यह लोकतंत्र के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मतदाता को किसी भी प्रकार के दबाव, धमकी, प्रलोभन या प्रतिशोध के भय के बिना अपनी स्वतंत्र इच्छा के अनुसार मत देने की सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे निर्वाचन प्रक्रिया निष्पक्ष और स्वतंत्र बनी रहती है।

प्रश्न 3: प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष चुनावों के उदाहरण दीजिए। हल: प्रत्यक्ष चुनाव (जिसमें मतदाता सीधे अपने प्रतिनिधि को चुनते हैं) के उदाहरण — लोकसभा के सदस्यों, राज्य विधानसभाओं के सदस्यों तथा स्थानीय निकायों (पंचायत, नगर निगम आदि) के प्रतिनिधियों का चुनाव। अप्रत्यक्ष चुनाव (जिसमें मतदाता किसी निर्वाचक-मंडल के माध्यम से प्रतिनिधि चुनते हैं) के उदाहरण — राज्यसभा के सदस्यों का चुनाव (जो विधायकों द्वारा किया जाता है), तथा भारत के राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति का चुनाव (जो संसद व विधानसभाओं के निर्वाचित/मनोनीत सदस्यों से बने निर्वाचक-मंडल द्वारा किया जाता है)।

प्रश्न 4: लोकसभा के सदस्यों का चुनाव, राज्यसभा के सदस्यों के चुनाव से किस प्रकार भिन्न है? हल: लोकसभा के सदस्यों का चुनाव देशभर के 543 निर्वाचन क्षेत्रों में सीधे नागरिकों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से किया जाता है — अर्थात् जनता स्वयं मतदान करके अपने प्रतिनिधि चुनती है। इसके विपरीत, राज्यसभा 'राज्यों की परिषद' है, जिसके 233 सदस्य राज्य विधानसभाओं के विधायकों द्वारा अप्रत्यक्ष चुनाव (एकल संक्रमणीय मत प्रणाली) के माध्यम से निर्वाचित किए जाते हैं, जबकि शेष 12 सदस्यों को राष्ट्रपति द्वारा विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से मनोनीत किया जाता है। राज्यसभा की सीटों का आवंटन राज्यों की जनसंख्या के आधार पर होता है, और यह एक स्थायी सदन है, जिसे एक-तिहाई सदस्य प्रत्येक दो वर्ष में सेवानिवृत्त होते हैं।

प्रश्न 5: आपके विचार से मतपत्रों की तुलना में ई.वी.एम. के क्या-क्या लाभ हैं?हल: यह एक विचार-आधारित प्रश्न है; एक संभावित उत्तर — इलेक्ट्रॉनिक मतदान मशीन (ई.वी.एम.) से मतगणना पारंपरिक मतपत्रों की तुलना में कहीं अधिक तीव्र व सरल होती है, और अवैध या त्रुटिपूर्ण मतों की संभावना बहुत कम हो जाती है। इससे बड़ी मात्रा में कागज़ की बचत होती है तथा मतपेटी में गड़बड़ी (जैसे बूथ-कैप्चरिंग या फर्जी मतपत्र भरना) की आशंका भी घटती है। साथ ही, वी.वी.पी.ए.टी. (VVPAT) की सुविधा मतदाता को यह सत्यापित करने देती है कि उसका मत सही ढंग से दर्ज हुआ है, जिससे प्रणाली में पारदर्शिता व विश्वसनीयता और बढ़ जाती है।

प्रश्न 6: भारत के कुछ नगरीय क्षेत्रों में मतदान प्रतिशत में कमी आ रही है। इस प्रवृत्ति के क्या कारण हो सकते हैं और अधिक लोगों को मतदान हेतु प्रोत्साहित करने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं?हल: संभावित कारण — शहरी नागरिकों में राजनीतिक उदासीनता व चुनावी प्रक्रिया के प्रति अविश्वास, कामकाजी व्यस्तता के कारण मतदान केंद्र तक जाने में असुविधा, निवास-स्थान बदलने के बावजूद पुराने निर्वाचन क्षेत्र में ही पंजीकरण बने रहना, तथा यह धारणा कि एक व्यक्तिगत मत से कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। संभावित समाधान — मतदाता जागरूकता अभियान चलाना, स्थानांतरित मतदाताओं लिए पंजीकरण-प्रक्रिया को सरल बनाना, कार्यस्थलों पर मतदान हेतु सवैतनिक अवकाश सुनिश्चित करना, तथा विशेषकर युवाओं को मीडिया व शिक्षा के माध्यम से मतदान के महत्व के प्रति संवेदनशील बनाना।

प्रश्न 7: आपके विचार में लोकसभा की कुछ सीटें अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित क्यों होती हैं? एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
हल: वर्तमान में लोकसभा की 543 सीटों में से 84 सीटें अनुसूचित जाति (एस.सी.) के लिए तथा 47 सीटें अनुसूचित जनजाति (एस.टी.) के लिए आरक्षित हैं। यह आरक्षण इसलिए दिया जाता है क्योंकि ऐतिहासिक रूप से इन समुदायों को सामाजिक भेदभाव व आर्थिक पिछड़ेपन का सामना करना पड़ा है, जिसके कारण खुली (सामान्य) प्रतिस्पर्धा में उनके प्रतिनिधियों के निर्वाचित होने की संभावना कम रह जाती थी। सीटों का आरक्षण यह सुनिश्चित करता है कि संसद में इन समुदायों की समुचित उपस्थिति बनी रहे, ताकि नीति-निर्माण में उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं व चिंताओं को भी सुना और सम्मिलित किया जा सके — यह सामाजिक न्याय व समावेशी प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने का एक संवैधानिक उपाय है।

प्रश्न 8: सोशल मीडिया हमारे चुनावी अनुभव के तरीके को बदल रहा है — आकर्षक प्रचार रीलों और लाइव भाषणों से लेकर इंस्टाग्राम और ट्विटर पर राजनैतिक वाद-विवाद तक। क्या यह लोकतंत्र को सशक्त बना रहा है या इसे उलझा रहा है? समूह बनाकर चर्चा कीजिए — इसके लाभ एवं चुनौतियां क्या हैं और डिजिटल युग में चुनावों का भविष्य क्या हो सकता है।
हल: यह एक समूह-चर्चा आधारित क्रियाकलाप है, अतः विद्यार्थी कक्षा में समूह बनाकर स्वयं चर्चा करें। चर्चा हेतु कुछ बिंदु — लाभ: सोशल मीडिया राजनैतिक जानकारी को तीव्रता से व व्यापक स्तर पर फैलाता है, युवाओं की राजनैतिक भागीदारी बढ़ाता है, और उम्मीदवारों को सीधे मतदाताओं से जुड़ने का अवसर देता है। चुनौतियां: गलत सूचना (मिसइन्फॉर्मेशन) व अफवाहों का तेज़ी से फैलना, ध्रुवीकरण बढ़ना, तथा विज्ञापित/प्रायोजित सामग्री व वास्तविक जानकारी के बीच अंतर करना कठिन होना। विद्यार्थी इन बिंदुओं के आधार पर डिजिटल युग में चुनावों के भविष्य पर अपने विचार प्रस्तुत करें।

प्रश्न 9: वेबसाइट <https://www.indiavotes.com> पर जाएं और किसी भी वर्ष के निर्वाचन संसदीय चुनाव क्षेत्र के परिणामों का अध्ययन करें। अपने राज्य के किसी विधान सभा चुनाव का भी इसी प्रकार अध्ययन करें। हल: यह एक स्वतंत्र शोध-आधारित क्रियाकलाप है, जिसे विद्यार्थियों को बताई गई वेबसाइट पर जाकर स्वयं करना है, क्योंकि इसमें प्रयुक्त वास्तविक निर्वाचन परिणाम-आंकड़े छात्र द्वारा चुने गए विशिष्ट वर्ष व क्षेत्र पर निर्भर करते हैं। विद्यार्थी अपने चयनित संसदीय व विधानसभा क्षेत्र के प्रमुख उम्मीदवारों, प्राप्त मतों तथा मतदान-प्रतिशत का अध्ययन कर एक संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार कर सकते हैं।

अध्याय का सार और महत्व

यह अध्याय हमें सिखाता है कि सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार भारतीय लोकतंत्र की आधारशिला है, जो प्रत्येक नागरिक को समान रूप से शासन में भागीदार बनाता है। भारत की निर्वाचन प्रणाली — चाहे वह लोकसभा का प्रत्यक्ष चुनाव हो या राज्यसभा, राष्ट्रपति व उपराष्ट्रपति का अप्रत्यक्ष निर्वाचन — निष्पक्ष, स्वतंत्र और सुव्यवस्थित प्रक्रिया के माध्यम से भारत के विशाल व विविधतापूर्ण लोकतंत्र को संचालित करती है। साथ ही, घटता शहरी मतदान-प्रतिशत, धन व सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव जैसी चुनौतियां यह स्मरण कराती हैं कि एक जागरूक व सतर्क मतदाता ही लोकतांत्रिक प्रणाली की सबसे मजबूत सुरक्षा है।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

प्रश्न: भारत में मतदान की न्यूनतम आयु कितनी है और यह कब निर्धारित की गई? उत्तर: भारत में मतदान की न्यूनतम आयु 18 वर्ष है। यह आयु 1988 में 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष की गई थी।

प्रश्न: ई.वी.एम. और वी.वी.पी.ए.टी. क्या हैं? उत्तर: ई.वी.एम.

(इलेक्ट्रॉनिक मतदान मशीन) एक ऐसी मशीन है जिस पर मतदाता बटन दबाकर अपना दर्ज करता है। वी.वी.पी.ए.टी. (वोटर वेरिफायेबल पेपर ऑडिट ट्रेल) इससे जुड़ी एक सुविधा है, जिसमें मतदाता द्वारा दर्ज मत की एक मुद्रित पर्ची कुछ क्षणों के लिए दिखाई देती है, जिससे वह अपने मत की पुष्टि कर सकता है।

प्रश्न: राज्यसभा में कुल कितने सदस्य होते हैं और वे किस प्रकार चुने जाते हैं? उत्तर: राज्यसभा के 233 सदस्य राज्य विधानसभाओं के विधायकों द्वारा अप्रत्यक्ष चुनाव के माध्यम से निर्वाचित होते हैं, जबकि 12 सदस्यों को राष्ट्रपति द्वारा विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से मनोनीत किया जाता है।

प्रश्न: भारत के प्रथम स्वतंत्र चुनाव के प्रथम मतदाता कौन थे? उत्तर: हिमाचल प्रदेश के एक विद्यालय शिक्षक श्याम शरण नेगी भारत के 1951 के प्रथम आम चुनाव में मतदान करने वाले पहले मतदाता थे। उन्होंने 2017 में, 100 वर्ष की आयु में भी अपना वोट डाला था।

अध्याय 6: संसदीय प्रणाली—विधायिका और कार्यपालिका

यह अध्याय NCERT कक्षा 8 सामाजिक विज्ञान (भाग 1) के अध्याय 6 पर आधारित है, जिसमें भारत की संसदीय प्रणाली, संसद के कार्यों, विधायिका व कार्यपालिका की भूमिकाओं, कानून-निर्माण की प्रक्रिया तथा केंद्र व राज्य स्तर पर शासन-प्रणाली की संरचना की चर्चा की गई है। नीचे पाठ्यपुस्तक के वास्तविक 'प्रश्न और क्रियाकलाप' खंड के हल दिए गए हैं।

कालखंड का संक्षिप्त परिचय

भारत की संसदीय प्रणाली दो सदनों — लोकसभा और राज्यसभा — पर आधारित है मिलकर देश की विधायिका (संसद) का निर्माण करती हैं। संसद के प्रमुख कार्य कानून बनाना, बजट पारित करना तथा कार्यपालिका (सरकार) के कार्यों की जाँच-पड़ताल करना है। भारतीय लोकतंत्र में कार्यपालिका (प्रधानमंत्री व मंत्रिपरिषद्) विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती है, जिससे शक्तियों के बीच संतुलन बना रहता है। इसी प्रकार, प्रत्येक राज्य की अपनी विधानसभा (राज्य विधानमंडल) और कार्यपालिका होती है, जो संविधान की संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची के अनुसार कानून बनाती है।

प्रश्न और क्रियाकलाप

प्रश्न 1: पता लगाइए कि आपके राज्य से संसद के प्रत्येक सदन में कितने प्रतिनिधि हैं। हल: यह एक स्वतंत्र शोध-आधारित क्रियाकलाप है, जिसे विद्यार्थियों को अपने-अपने राज्य के अनुसार स्वयं करना है, क्योंकि प्रत्येक राज्य से लोकसभा व राज्यसभा में प्रतिनिधियों की संख्या राज्य की जनसंख्या पर निर्भर करते हुए भिन्न-भिन्न होती है। विद्यार्थी भारत निर्वाचन आयोग या संसद की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर अपने राज्य के सांसदों की सूची व संख्या ज्ञात कर सकते हैं।

प्रश्न 2: वे कौन-से तत्व हैं जो भारतीय संसद को 'जनता की आवाज़' बनाते हैं? यह कैसे सुनिश्चित करती है कि विभिन्न विचारों को सुना जाए? हल: भारतीय संसद को 'जनता की आवाज़' बनाने वाले प्रमुख तत्व हैं — सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के माध्यम से लोकसभा सदस्यों का प्रत्यक्ष चुनाव, जिससे देश के हर क्षेत्र व समुदाय का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित होता है; अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित सीटें, जो वंचित समुदायों की आवाज़ को भी संसद तक पहुँचाती हैं; तथा राज्यसभा, जो राज्यों के हितों का प्रतिनिधित्व करती है। इसके अतिरिक्त, संसद में विपक्ष की उपस्थिति, बहस-मुबाहसे, प्रश्नकाल तथा स्थायी समितियाँ यह सुनिश्चित करती हैं कि विभिन्न राजनैतिक दलों व विचारधाराओं के विचारों को सुना और चर्चा में सम्मिलित किया जाए।

प्रश्न 3: आपके विचार से संविधान ने कार्यपालिका को विधायिका के प्रति उत्तरदायी क्यों बनाया? हल: संविधान ने कार्यपालिका (प्रधानमंत्री व मंत्रिपरिषद्) को विधायिका के प्रति उत्तरदायी इसलिए बनाया ताकि सत्ता के दुरुपयोग को रोका जा सके और शासन जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों की निगरानी में संचालित हो। चूँकि मंत्रिपरिषद् तभी तक पद पर बनी रहती है जब तक उसे लोकसभा का विश्वास प्राप्त है, इसलिए कार्यपालिका को अपने प्रत्येक निर्णय व नीति के लिए संसद के समक्ष जवाबदेह होना पड़ता है। यह व्यवस्था लोकतांत्रिक जवाबदेही सुनिश्चित करती है और शक्तियों के पृथक्करण के साथ-साथ पारस्परिक संतुलन (checks and balances) को भी बनाए रखती है।

प्रश्न 4: आपके अनुसार केंद्र स्तर पर द्विसदनीय विधायिका क्यों चुनी गई? हल: केंद्र स्तर पर द्विसदनीय विधायिका (लोकसभा और राज्यसभा) चुनने के पीछे कई कारण हो सकते हैं — राज्यसभा भारत के संघीय ढाँचे का प्रतिनिधित्व करती है, जिससे राज्यों की आवाज़ भी राष्ट्रीय नीति-निर्माण में सुनी जा सके। यह एक 'पुनरीक्षण सदन' (revising chamber) के रूप में भी कार्य करती है, जिससे लोकसभा में जल्दबाज़ी में पारित किसी विधेयक पर अतिरिक्त विचार-विमर्श का अवसर मिलता है। साथ ही, राज्यसभा एक स्थायी सदन है (जो कभी भंग नहीं होती, केवल एक-तिहाई सदस्य प्रत्येक दो वर्ष में सेवानिवृत्त होते हैं), जिससे शासन में निरंतरता बनी रहती है, तथा इसमें राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत प्रतिष्ठित व्यक्ति भी विशेषज्ञ राय प्रदान कर सकते हैं।

प्रश्न 5: हाल ही में संसद में पारित किसी विधेयक की पूरी प्रक्रिया को समझने का प्रयास कीजिए। जानिए कि वह विधेयक सबसे पहले किस सदन में प्रस्तुत किया गया था। क्या उस पर कोई बड़ी चर्चा या विरोध हुआ था? इस विधेयक को कानून बनने में कितना समय लगा? इसके लिए आप समाचार-पत्रों की पुरानी खबरें, सरकारी वेबसाइटें और लोकसभा की चर्चाएँ देख सकते हैं। हल: यह एक स्वतंत्र शोध-आधारित क्रियाकलाप है, जिसे विद्यार्थियों को किसी हाल के विधेयक का चयन कर स्वयं करना है। सामान्य रूप से किसी भी विधेयक के कानून बनने की प्रक्रिया इस प्रकार होती है — विधेयक संसद के किसी भी सदन में प्रस्तुत किया जाता है, फिर उसका वाचन होता है, तत्पश्चात उसे विस्तृत जाँच हेतु स्थायी समिति को भेजा जाता है, फिर खंड-दर-खंड चर्चा व संशोधनों पर मतदान होता है, विधेयक पर मतदान के बाद यही प्रक्रिया दूसरे सदन में दोहराई जाती है, और अंत में राष्ट्रपति की स्वीकृति व राजपत्र अधिसूचना के साथ यह कानून बन जाता है। विद्यार्थी अपने चयनित विधेयक के लिए यही चरण समाचार-पत्रों व सरकारी स्रोतों से खोजकर एक समयरेखा तैयार कर सकते हैं।

प्रश्न 6: संसद द्वारा हाल ही में पारित किसी कानून का चयन कीजिए। कक्षा को अलग-अलग समूह में बाँटिए — कुछ विद्यार्थी लोकसभा और राज्यसभा के सांसद बनें, कुछ मंत्री बनें जो प्रश्नों के उत्तर दें और कोई राष्ट्रपति की भूमिका निभाए। सभी मिलकर एक लघु नाटिका तैयार करें जिसमें दर्शाया जाए कि एक विधेयक संसद में कैसे प्रस्तुत होता है, कैसे उस पर चर्चा होती है, वह पारित होता है और अंत में राष्ट्रपति की स्वीकृति मिलने पर कानून बन जाता है। एक 'मॉडल संसद' का मंचन कीजिए। हल: यह एक कक्षा-आधारित भूमिका-अभिनय (रोल क्रियाकलाप है, अतः विद्यार्थी स्वयं समूह बनाकर आयोजित करें। मंचन की रूपरेखा के लिए पाठ्यपुस्तक में वर्णित प्रक्रिया का पालन किया जा सकता है — विधेयक का प्रस्तुतीकरण व वाचन, स्थायी समिति को प्रेषण, खंड-दर-खंड चर्चा एवं संशोधनों पर मतदान, विधेयक पर मतदान, दूसरे सदन में प्रक्रिया की पुनरावृत्ति, तथा अंत में राष्ट्रपति की स्वीकृति व राजपत्र अधिसूचना।

प्रश्न 7: महिला आरक्षण विधेयक, 2023 व्यापक समर्थन के साथ पारित हुआ। इतने लंबे समय तक चर्चा के बाद भी इस विधेयक को पारित होने में 25 वर्ष से अधिक समय क्यों लगा? हल: यह एक विचार-आधारित प्रश्न है; संभावित कारण — लंबे समय तक विभिन्न राजनैतिक दलों के बीच इस विषय पर व्यापक सहमति नहीं बन पा रही थी। कुछ दलों की माँग थी कि महिला आरक्षण के भीतर अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) व अल्पसंख्यक महिलाओं के लिए भी उप-कोटा (sub-quota) होना चाहिए, जिस पर राजनैतिक सहमति नहीं बन सकी। इसके अतिरिक्त, संसदीय कार्यकाल की अस्थिरता, सरकारों का बदलना, तथा पूर्व में प्रस्तुत किए गए इसी प्रकार के विधेयकों का संसद भंग होने पर स्वतः समाप्त (लैप्स) हो जाना भी विलंब के कारण रहे। अंततः 2023 में व्यापक राजनैतिक सहमति बनने पर यह विधेयक पारित हो सका।

प्रश्न 8: कभी-कभी संसद बाधित हो जाती है और जितने दिनों तक इसे कार्य करना चाहिए, उतना कार्य नहीं कर पाती। आपको क्या लगता है कि इसका कानूनों की गुणवत्ता और लोगों के अपने प्रतिनिधियों के प्रति विश्वास पर क्या प्रभाव पड़ता है? हल: यह एक विचार-आधारित प्रश्न है; एक संभावित उत्तर — जब संसद बार-बार बाधित होती है, तो विधेयकों पर पर्याप्त चर्चा व जाँच-पड़ताल का समय नहीं मिल पाता, जिससे कानूनों की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है और वे जल्दबाज़ी में बिना पूर्ण विचार-विमर्श के पारित हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, बार-बार होने वाला व्यवधान नागरिकों के मन में यह धारणा बना सकता है कि उनके प्रतिनिधि जनहित के मुद्दों की अपेक्षा राजनैतिक टकराव को प्राथमिकता दे रहे हैं, जिससे लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति जनता का विश्वास कमज़ोर पड़ सकता है।

प्रश्न 9: क्या आप विद्यार्थियों के बीच हित समूह बनाकर किसी नीति से संबंधित प्रश्नों की एक सूची तैयार कर सकते हैं, जिन्हें आप अपने सांसद या विधायक से पूछना चाहेंगे? यही प्रश्न विधायक के स्थान पर सांसद से पूछे जाएँ तो उनमें क्या अंतर होगा? और यदि सांसद की जगह विधायक से पूछेंगे तो प्रश्न कैसे भिन्न होंगे? हल: यह एक समूह-आधारित क्रियाकलाप है, अतः विद्यार्थी कक्षा में समूह बनाकर स्वयं सूची तैयार करें। सामान्य दिशा-निर्देश — सांसद से राष्ट्रीय स्तर के विषयों (जैसे राष्ट्रीय नीतियाँ, रक्षा, विदेश नीति, केंद्रीय योजनाएँ) से संबंधित प्रश्न पूछे जा सकते हैं, जबकि विधायक से राज्य व स्थानीय स्तर के विषयों (जैसे राज्य की सड़कें, स्कूल, स्वास्थ्य सेवाएँ, स्थानीय बुनियादी ढाँचा) से संबंधित प्रश्न अधिक उपयुक्त होंगे, क्योंकि यह विभाजन संघ सूची, राज्य सूची व समवर्ती सूची के विषयों पर आधारित है।

प्रश्न 10: भारतीय लोकतंत्र में न्यायपालिका की क्या भूमिका है? यदि हमारे पास स्वतंत्र न्यायपालिका न हो तो क्या हो सकता है? हल: भारतीय लोकतंत्र में न्यायपालिका की प्रमुख भूमिका यह सुनिश्चित करना है कि संसद व राज्य विधानमंडलों द्वारा बनाए गए कानून तथा कार्यपालिका के कार्य संविधान के अनुरूप हों — इसे न्यायिक समीक्षा (judicial review) कहा जाता है। न्यायपालिका नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा भी करती है। यदि हमारे पास स्वतंत्र न्यायपालिका न हो, तो विधायिका व कार्यपालिका की शक्तियों पर कोई प्रभावी अंकुश नहीं रहेगा, जिससे सत्ता के दुरुपयोग की संभावना बढ़ सकती है, नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा कमजोर पड़ सकती है, और कानून के शासन (rule of law) के स्थान पर मनमाना शासन स्थापित होने का खतरा उत्पन्न हो सकता है।

अध्याय का सार और महत्त्व

यह अध्याय हमें सिखाता है कि भारत की संसदीय प्रणाली विधायिका (लोकसभा-राज्यसभा), कार्यपालिका (प्रधानमंत्री व मंत्रिपरिषद) तथा न्यायपालिका के बीच शक्तियों के सुव्यवस्थित बँटवारे व पारस्परिक जवाबदेही पर आधारित है। कानून-निर्माण की सुव्यवस्थित प्रक्रिया — विधेयक के प्रस्तुतीकरण से लेकर राष्ट्रपति की स्वीकृति तक — यह सुनिश्चित करती है कि प्रत्येक कानून पर पर्याप्त विचार-विमर्श हो। केंद्र व राज्य दोनों स्तरों पर ऐसी संरचनाएँ बनाई गई हैं, जो प्रतिनिधित्व, उत्तरदायित्व और एकता में संतुलन स्थापित करती हैं, जिससे भारत का लोकतंत्र सुदृढ़ बना रहता है।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

प्रश्न: भारत की संसद के कितने सदन हैं और उनके नाम क्या हैं? उत्तर: भारत की संसद के दो सदन हैं — लोकसभा (निम्न सदन) और राज्यसभा (उच्च सदन, जिसे 'राज्यों की परिषद' भी कहा जाता है)।

प्रश्न: स्थायी समिति (Standing Committee) क्या है? उत्तर: स्थायी समिति सांसदों से बनी एक स्थायी समिति होती है, जो सरकार की गतिविधियों की जाँच-पड़ताल करती है, सुझाव देती है और सरकार द्वारा किए गए कार्यों पर प्रश्न पूछती है। विधेयकों को विस्तृत जाँच हेतु प्रायः इन्हीं समितियों को भेजा जाता है।

प्रश्न: संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची में क्या अंतर है? उत्तर: संघ सूची में वे विषय शामिल हैं जिन पर केवल केंद्र सरकार कानून बना सकती है, राज्य सूची में वे विषय हैं जिन पर केवल राज्य सरकारें कानून बना सकती हैं, तथा समवर्ती सूची में वे विषय शामिल हैं जिन पर केंद्र व राज्य दोनों सरकारें कानून बना सकती हैं — यदि इस पर संघ सरकार कानून बना दे, तो राज्य सरकार को उसका पालन करना अनिवार्य होता है।

प्रश्न: किसी विधेयक के कानून बनने की अंतिम प्रक्रिया क्या है? उत्तर: विधेयक दोनों सदनों में पारित होने के बाद राष्ट्रपति की स्वीकृति हेतु भेजा जाता है। राष्ट्रपति की स्वीकृति मिलने पर यह राजपत्र (गजट) में अधिसूचित किया जाता है और औपचारिक रूप से कानून बन जाता है।

अध्याय 7: उत्पादन के कारक

यह अध्याय NCERT कक्षा 8 सामाजिक विज्ञान (भाग 1) के अध्याय 7 पर आधारित जिसमें उत्पादन के कारकों (भूमि, श्रम, पूँजी, मानव पूँजी, उद्यमिता एवं प्रौद्योगिकी), उनके परस्पर संबंधों तथा भारत में मानव पूँजी के विकास से जुड़ी चुनौतियों की चर्चा की गई है। नीचे पाठ्यपुस्तक के वास्तविक 'प्रश्न और क्रियाकलाप' खंड के हल दिए गए हैं।

कालखंड का संक्षिप्त परिचय

किसी भी वस्तु या सेवा के उत्पादन के लिए कुछ आधारभूत संसाधनों की आवश्यकत होती है, जिन्हें उत्पादन के कारक कहा जाता है — जैसे भूमि, श्रम, पूँजी, मानव पूँजी (कौशल एवं ज्ञान), उद्यमिता तथा प्रौद्योगिकी। ये सभी कारक एक-दूसरे से गहराई से जुड़े होते हैं और मिलकर ही किसी व्यवसाय या अर्थव्यवस्था की उत्पादकता निर्धारित करते हैं। मानव पूँजी की गुणवत्ता — जैसे साक्षरता, कौशल-प्रशिक्षण तथा कार्य-संस्कृति — किसी देश की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विश्व बैंक के 2023 के अनुमान के अनुसार भारत में वयस्क साक्षरता दर पुरुषों के लिए लगभग 85 प्रतिशत और महिलाओं के लिए लगभग 70 प्रतिशत है, जो यह दर्शाता है कि अनेक क्षेत्रों में प्रगति के बावजूद भारत मानव पूँजी विकसित करने में अब भी चुनौतियों का सामना करता है।

प्रश्न और क्रियाकलाप

प्रश्न 1: उत्पादन के कारक एक-दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं? पाठगत अभ्यास में उत्पादन के कारकों को वर्गीकृत करने में आपने किन-किन कठिनाइयों का सामना किया? हल: उत्पादन के प्रमुख कारक हैं — भूमि (प्राकृतिक संसाधन, जैसे ज़मीन, कच्चा माल), श्रम (शारीरिक व मानसिक कार्य करने वाले लोग), पूँजी (मशीनें, उपकरण, धन), मानव पूँजी (लोगों का कौशल, ज्ञान व शिक्षा), उद्यमिता (व्यवसाय आरंभ करने व जोखिम उठाने की क्षमता) तथा प्रौद्योगिकी (कार्य को अधिक कुशल बनाने वाले उपकरण व तकनीक)। ये एक-दूसरे से इस अर्थ में भिन्न हैं कि प्रत्येक कारक उत्पादन प्रक्रिया में अलग भूमिका निभाता है, फिर भी व्यवहार में इन्हें अलग-अलग वर्गीकृत करना कठिन हो सकता है — उदाहरण के लिए, किसी कारीगर का कौशल (मानव पूँजी) और उसके द्वारा किया गया शारीरिक कार्य (श्रम) प्रायः एक-दूसरे से इतने घुले-मिले होते हैं कि उन्हें स्पष्ट रूप से पृथक करना चुनौतीपूर्ण होता है।

प्रश्न 2: मानव पूँजी, भौतिक पूँजी से किस प्रकार भिन्न है? हल: भौतिक पूँजी में वे मूर्त (टैजिबल) संसाधन शामिल हैं जिनका उपयोग उत्पादन में किया जाता है, जैसे मशीनें, भवन, उपकरण व औज़ार। इसके विपरीत, मानव पूँजी एक अमूर्त संसाधन है, जिसमें लोगों का ज्ञान, कौशल, शिक्षा, प्रशिक्षण व अनुभव सम्मिलित है। भौतिक पूँजी समय के साथ घिसती व पुरानी होती है, जबकि मानव पूँजी शिक्षा, अभ्यास व अनुभव के माध्यम से समय के साथ और अधिक मूल्यवान बन सकती है।

प्रश्न 3: प्रौद्योगिकी व्यक्ति के कौशल और ज्ञान के विकास को किस प्रकार परिवर्तित कर रही है, आप इस विषय में क्या सोचते हैं? हल: यह एक विचार-आधारित प्रश्न है; एक संभावित उत्तर — प्रौद्योगिकी (जैसे इंटरनेट, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरण) ने ज्ञान व कौशल तक पहुँच को कहीं अधिक सुलभ व तीव्र बना दिया है, जिससे लोग नए कौशल घर बैठे भी सीख सकते हैं। साथ ही, प्रौद्योगिकी नए प्रकार के कौशलों (जैसे डिजिटल साक्षरता, कोडिंग) की माँग भी उत्पन्न कर रही है, जिससे पारंपरिक कौशलों के साथ-साथ नई क्षमताएँ विकसित करना आवश्यक होता जा रहा है।

प्रश्न 4: कौशल वह है जिसे आप अभ्यास से सीखते और उसमें निपुण होते हैं। यह किसी भी कार्य, जैसे खेल खेलना, रचनात्मक लेखन करना, गणित की समस्याएँ हल करना, भोजन बनाना आदि के प्रभावी निष्पादन में आपकी सहायता करता है। यहाँ तक कि लोगों से उचित संवाद स्थापित करना भी एक कौशल है। यदि आज आप कोई एक कौशल सीखने का अवसर मिले तो आप कौन-सा कौशल सीखना चाहेंगे और क्यों? हल: यह एक व्यक्तिगत विचार-आधारित प्रश्न है, अतः विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार स्वयं उत्तर दें। एक नमूना उत्तर — मैं सार्वजनिक रूप से बोलने (पब्लिक स्पीकिंग) का कौशल सीखना चाहूँगा, क्योंकि यह मुझे अपने विचारों को आत्मविश्वास के साथ व्यक्त करने, समूह-चर्चाओं में प्रभावी ढंग से भाग लेने तथा भविष्य में नेतृत्व की भूमिकाओं के लिए तैयार होने में सहायता करेगा।

प्रश्न 5: क्या आप मानते हैं कि उद्यमिता उत्पादन की 'प्रेरक शक्ति' है?

क्यों या क्यों नहीं?हल: यह एक विचार-आधारित प्रश्न है; एक संभावित उत्तर — हाँ, उद्यमिता को उत्पादन की 'प्रेरक शक्ति' माना जा सकता है, क्योंकि एक उद्यमी ही भूमि, श्रम, पूँजी व प्रौद्योगिकी जैसे अन्य कारकों को संगठित कर, जोखिम उठाकर, नवाचार के माध्यम से किसी विचार को वास्तविक वस्तु या सेवा में परिवर्तित करता है। यदि उद्यमिता न हो, तो अन्य कारक उपलब्ध होने पर भी उत्पादन की प्रक्रिया आरंभ नहीं हो सकती।

प्रश्न 6: क्या प्रौद्योगिकी अन्य कारकों, जैसे श्रम को प्रतिस्थापित कर

सकती है? यह अच्छा है या बुरा? अपने उत्तर की पुष्टि उदाहरण की सहायता से करें।हल: यह एक विचार-आधारित प्रश्न है; एक संभावित उत्तर — हाँ, कुछ सीमा तक प्रौद्योगिकी श्रम को प्रतिस्थापित कर सकती है, जैसे किसी कारखाने में स्वचालित मशीनें (ऑटोमेशन) पहले श्रमिकों द्वारा किए जाने वाले दोहराव वाले कार्य कर सकती हैं। यह एक साथ अच्छा व बुरा दोनों हो सकता है — अच्छा इसलिए क्योंकि इससे उत्पादकता व दक्षता बढ़ती है, परंतु बुरा इसलिए क्योंकि इससे कुछ श्रमिकों का रोज़गार प्रभावित हो सकता है, जब तक कि वे नए कौशल सीखकर स्वयं को नई भूमिकाओं के अनुकूल न ढालें।

प्रश्न 7: शिक्षा और कौशल-प्रशिक्षण मानव पूँजी को किस प्रकार प्रभावित करते हैं? क्या वे एक-दूसरे को प्रतिस्थापित करते हैं या एक-दूसरे के पूरक हैं?हल:

शिक्षा व्यक्ति को सैद्धांतिक ज्ञान, विश्लेषणात्मक क्षमता व व्यापक समझ प्रदान करती है, जबकि कौशल-प्रशिक्षण व्यावहारिक व विशिष्ट कार्य-दक्षता विकसित करता है — दोनों मिलकर मानव पूँजी की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं। ये एक-दूसरे को प्रतिस्थापित नहीं करते, बल्कि एक-दूसरे के पूरक (कॉम्प्लीमेंटरी) हैं, क्योंकि शिक्षा से प्राप्त बुनियादी समझ

कौशल-प्रशिक्षण को अधिक प्रभावी बनाती है, तथा व्यावहारिक कौशल शिक्षा को रोज़गार व वास्तविक जीवन में उपयोगी बनाते हैं।

प्रश्न 8: कल्पना कीजिए कि आप एक व्यवसाय आरंभ करना चाहते हैं जो स्टील की पानी की बोतलों का उत्पादन करेगा। आपको किस प्रकार के इनपुट्स की आवश्यकत होगी? आप उन्हें कैसे प्राप्त करेंगे? यदि कोई एक कारक उपलब्ध न हो तो आपके व्यवसाय के संचालन पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? हल: इस व्यवसाय के लिए आवश्यक इनपुट्स होंगे — भूमि (कारखाना स्थापित करने हेतु स्थान), कच्चा माल (स्टील), पूँजी (मशीनरी, निर्माण-उपकरण व प्रारंभिक निवेश हेतु धन), श्रम (कुशल व अकुशल कर्मचारी), मानव पूँजी (गुणवत्ता-नियंत्रण व डिज़ाइन का ज्ञान रखने वाले लोग) तथा उद्यमिता (व्यवसाय की योजना बनाने व जोखिम उठाने की क्षमता)। इन्हें आपूर्तिकर्ताओं से कच्चा माल खरीदकर, बैंक ऋण या निवेशकों से पूँजी जुटाकर, तथा भर्ती के माध्यम से श्रमिकों को नियुक्त करके प्राप्त किया जा सकता है। यदि कोई एक कारक (जैसे पूँजी या कच्चा माल) उपलब्ध न हो, तो उत्पादन में देरी, गुणवत्ता में गिरावट अथवा व्यवसाय का संचालन ही असंभव हो सकता है, क्योंकि सभी कारक परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर होते हैं।

प्रश्न 9: किसी उद्यमी या संस्थापक का साक्षात्कार कीजिए और जानिए कि उन्हें व्यवसाय आरंभ करने की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई, उन्हें कौन-कौन से अवसर प्राप्त हुए और उन्हें किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा। आप समूहों में बँटकर एक प्रश्नावली बना सकते हैं और प्राप्त जानकारी को एक रिपोर्ट में साझा कर सकते हैं। हल: यह एक स्वतंत्र क्षेत्र-आधारित साक्षात्कार क्रियाकलाप है, अतः विद्यार्थी अपने आस-पास के किसी वास्तविक उद्यमी (जैसे स्थानीय दुकानदार, फ़ूड स्टॉल संचालक या छोटे व्यवसायी) का साक्षात्कार कर स्वयं जानकारी एकत्रित करें और उसे एक संक्षिप्त रिपोर्ट के रूप में प्रस्तुत करें।

अध्याय का सार और महत्त्व

यह अध्याय हमें सिखाता है कि किसी भी वस्तु या सेवा के उत्पादन के लिए भूमि, श्रम, पूँजी, मानव पूँजी, उद्यमिता व प्रौद्योगिकी — इन सभी कारकों का परस्पर समन्वय आवश्यक है। मानव पूँजी (शिक्षा, कौशल व अनुभव) तथा उद्यमिता (नवाचार व जोखिम उठाने की क्षमता) आधुनिक अर्थव्यवस्था में उत्पादकता बढ़ाने के विशेष रूप से महत्वपूर्ण कारक बनते जा रहे हैं। साथ ही, जापान की 'काइज़ेन' (सतत सुधार) जैसी अवधारणाएँ यह दर्शाती हैं कि कार्य-संस्कृति व सतत सुधार की भावना भी किसी देश या व्यवसाय की दीर्घकालिक उत्पादकता व समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

प्रश्न: उत्पादन के प्रमुख कारक कौन-कौन से हैं? उत्तर: उत्पादन के प्रमुख कारक हैं — भूमि, श्रम, पूँजी, मानव पूँजी, उद्यमिता तथा प्रौद्योगिकी। ये सभी मिलकर किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन को संभव बनाते हैं।

प्रश्न: 'काइज़ेन' (Kaizen) क्या है? उत्तर: 'काइज़ेन' एक जापानी अवधारणा है जिसका अर्थ है 'सतत सुधार'। इसे जापान में 1940 के दशक के मध्य से अपनाया जा रहा है और इसने जापान को अपने निवासियों के लिए उच्च जीवन-गुणवत्ता प्राप्त करने में सहायता की है।

प्रश्न: भारत में वयस्क साक्षरता दर कितनी है? उत्तर: विश्व बैंक द्वारा 2023 में लगाए गए अनुमान के अनुसार भारत में वयस्क साक्षरता दर पुरुषों के लिए लगभग 85 प्रतिशत और महिलाओं के लिए लगभग 70 प्रतिशत है।

प्रश्न: मानव पूँजी और भौतिक पूँजी में मुख्य अंतर क्या है? उत्तर: भौतिक पूँजी मूर्त संसाधन हैं, जैसे मशीनें व उपकरण, जबकि मानव पूँजी अमूर्त है — इसमें लोगों का ज्ञान, कौशल, शिक्षा व अनुभव शामिल है, जो शिक्षा व अभ्यास के माध्यम से समय के साथ और अधिक मूल्यवान बन सकता है।